

Vol. No. 149

Ahimsa Foundation

January, 2013

The Only Jain E-Magazine

in
Community Service for 13th Continuous Years

World Over + 1
Lakh Readership



Real Renunciation

On the path mapped out by the true spiritual philosophers and pioneers, there is great emphasis placed on the idea and need for renunciation. It is seen as the way to enlightenment, and freedom from the attachments which we misuse as sources of limited happiness and contentment. Renunciation does not mean giving everything away, shaving our heads, saying farewell to family and friends and finding a Himalayan mountain top. It means seeing our attachments and dependencies, our weaknesses and our evasions, and consciously giving them up. There is no sense of loss. The material necessities still come to us, paradoxically more will come. And when we renounce our own weaknesses and dependencies there is always a strength and a new freedom to be found hiding underneath. Renunciation is a pathway to a simpler life and a highway to spiritual freedom - one of spirit's deepest yearnings in 'the age of accumulation'.

SAINTS

JAIN SAINTS NAYPADAMSAGARJI AND MAYANA SHRIJI HONOUR WOMEN ACHIEVERS IN PARLIAMENT

HOUSE - Dec 22, 2012, New Delhi: Leading women luminaries such as singer Asha Bhosle, Supreme Court judges Gyansudha Mishra and Ranjana Desai and industrialist Savitri Jindal were felicitated at an award function supported and guided by The Times Foundation, marking the inauguration of celebrations of The Times of India's 175 years.

Other eminent personalities felicitated at the function were Ms. Nalini Chidambaram : Lawyer (Wife of P. Chidambaram), Mrs. Sameem Azad : Singer, (Wife of Ghulab Nabi Azad), Smt. Chanda

Kochhar: Managing Director and CEO, ICICI Bank, Smt. Usha Jain : Director and Chairperson, Luxor Pens, Smt. Amita Chauhan : Chairperson, Amity University, Ms. Nilofer Bakhtiyar: International Director - Lions Club President of the Women's Wing of the Pakistan Muslim League, Mrs. Vandana Luthra : Founder VICC, Smt. Nirmala Devi Sardarmal Jain:



Managing Trustee, Nirmal Group of Companies, Smt. Smrutiben Shreyanshbhai Shah: Managing Director, Gujarat Samachar, Smt. Indu Jain : Chairperson, Times Group.

On the occasion, Justices Mishra and Desai released the book 'Encyclopaedia of Indian Saints and Sages', written by N. K. Prasad and Times Group chairman Indu Jain. Justice Mishra reiterated the need to strengthen women rather than treat them as ornamental objects. "It's good to worship women but learn to listen to them also. Demanding more women judges, Mishra asserted that since 1950 "we are just two women nyayadheesh (justice). Nyayadheesh should not be gender-specific. They are nyayadheesh, not a man or a woman."

Sadhvi Shri Mayana Shriji Maharaj, while lauding the role of woman in a man's life put forth few demands on behalf of women on the occasion. These include a) increase in budget for women's welfare in government expenditure, b) women police stations across small and big cities of India, c) ban/censorship of pornographic films in India to save Indian culture and filtering of Internet information. To commemorate Happy Woman's Day she also called on all men in the country to "say sorry to their wives, mothers, daughters and sisters".

Award for Delhi chief minister Sheila Dikshit was collected by Kiran Walia, minister of health and family welfare and women and child development, Delhi government. Award for Times Group chairman Indu Jain was collected by Speaking Tree editor Narayani Ganesh. The function was organized by Happy Woman Happy World Foundation under the auspices of revered Jain Gurus Shri Naypadamsagarji Maharaj and Sadhvi Shri Mayana Shriji, at the Balayogi Auditorium, Parliament House, to commemorate Happy Woman's Day earlier this week.

AWARDEES

								
Justice Gyan Sudha Mishra	Justice Ranjana Desai	Mrs. Sameem Azad Singer	Smt. Savitri Jindal Jindal Group	Smt. Asha Bhosle Singer	Smt. Usha Jain Director Luxor Pens	Smt. Amita Chauhan Amity University	Ms. Nilofer Bakhtiyar Lions Club	Mrs. Vandana Luthra Founder VICC

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की पुण्यतिथि मनाई गई



पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म० सा० की 27वीं पुण्यतिथि अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ जहाज मंदिर मांडवला में मिगसर वदि 7 ता० 6 दिसम्बर 2012 को मनाई गई। समारोह को निश्चा प्रदान की पूजनीया ध्वल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म० सा० की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म० आदि ठाणा एवं पूजनीया तपागच्छीय साध्वी श्री विनयरत्नाश्रीजी म० सा० आदि ठाणा ने! पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म०, जयरत्नाश्रीजी म० नूतनप्रिया श्रीजी म० ने पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त के जीवन की उज्ज्वल गाथाओं का वर्णन करते हुए उनके असीम उपकारों का स्मरण किया... श्रद्धांजली अर्पण की। पूजनीया साध्वी श्री विनयरत्नाश्रीजी म० ने जहाज मंदिर तीर्थ की विशिष्टताओं का वर्णन करते हुए पूज्य

आचार्य भगवन्त के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पण की। दोपहर में श्री जिनकान्तिसागरसूरि गुरु पद पूजा पढाई गई व आरती उतारी गई। इस मेले का संपूर्ण लाभ श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई द्वारा लिया गया। Source: Jahaj Mandir, E-Mail : jahajmandir30@gmail.com

TARUN SAGAR MAHARAJ INTERACTS WITH SABARMATI JAIL INMATES, AHMEDABAD



Ahmedabad: Jain Muni Tarun Sagar Maharaj gave a discourse to inmates of Sabarmati jail. The Jain Muni was awestruck by the peace on the jail premises. He exclaimed, "This is not a jail, but an ashram." The revolutionary religious leader talked about life and mistakes people make. "A small dust particle results into an eye sore, similarly, a small mistake can make our lives miserable." He was explaining to the inmates how small mistakes they made changed their lives. However, there is always a way ahead, he told them. "A person becomes a true king only after he has seen the hardships in life," added the Jain Muni. He was so impressed with the arrangements at Sabarmati jail that he remarked that his visit to Ahmedabad would have been incomplete had he not visited the jail.

ACHARYA MAHASHRAMAN AND MONKS AND NUNS ARE WALKING TOWARDS TAPARA IN RAJASTHAN



श्रमण संघीय प्रथम युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी म० सा० "मधुकर" - जीवन दर्शन

जन्म शताब्दी वर्ष 27-12-2012 से 16-12-2013, जिस संत को हजारों-लाखों लोगों की असीम श्रद्धा भक्ति प्राप्त हो और वो उससे बिलकुल ही निस्पृह, अनासक्त तथा सीधा-सरल भाव-युक्त रहे, तो ये ऐसी बात होगी कि गुलाब का फूल तो है, सुगंध और सौन्दर्य भी है, मगर उसमें कांटा नहीं है। ऐसे ही अनूठे, सीधे-सादे, विनम्र, गुणज्ञ, एकांतप्रिय, सरल और सच्चे संत थे मधुकर मुनि जी। जिनकी जनम शताब्दी वर्ष हम मनाने जा रहे हैं। पूज्य गुरुदेव श्री का जनम वि० स० 1970 मार्गशीर्ष शुक्ल 14, दिनांक 12 दिसंबर 1913 को जोधपुर के पास तिन्वरी ग्राम में हुआ। आप श्री के पिता का नाम श्री जमनालाल जी धारीवाल (कोठारी) एवं माता जी का नाम श्रीमति तुलसाबाई था। आपका बचपन का नाम मिश्रीमल था। छोटी आयु में ही आपके सिर से पिता श्री का साया उठ गया।

आप मे बचपन से ही धर्म गुरुओ के प्रति श्रद्धा भक्ति थी। एक बार स्वामी जी श्री जोरावरमल जी म० सा० व्याख्यान दे रहे थे, तब स्थानक के बाहर सारे बच्चे खेल रहे थे। उस समय गुरुदेव श्री की उम्र 6-7 वर्ष की थी। आपने सभी बच्चों से कहा कि अंदर गुरुदेव व्याख्यान दे रहे हैं, बाहर मैं भी तुम्हें व्याख्यान सुनाता हूँ। सब बालक बैठ गए। आप मिट्टी का ऊंचा चबूतरा बनाकर बैठे और बच्चो से बोले-मैं तुम्हारा गुरु हूँ, तुम सब मेरे चेले हो, मैं व्याख्यान सुना रहा हूँ, तुम खमा बापजी बोलना। बालक मिश्रीमल के यही संस्कार धीरे धीरे दीक्षा लेने की तैयारी मे रंग गए। माता श्री तुलसा जी ने जब ये शुभ संस्कार बालक मिश्रीमल मे देखे, तो उन्होने गुरुदेव श्री जोरावरमल जी म० सा० को दीक्षा देने की प्रार्थना कर दी। परिवार के अन्य लोगों ने आपकी दीक्षा मे कई विग्न पैदा किये। बात कचहरी तक चली गयी। तब स्वयं मजिस्ट्रेट ने आपकी परीक्षा ली और नन्हें बालक का वैराग्य, और प्रबुद्धता देखकर चकित रह गए और दीक्षा की आज्ञा जारी की। आखिर मे वि० स० 1980 वैशाख शुक्ल 10, दिनांक 26 अप्रैल 1923 को अजमेर के भिणाय ग्राम मे अत्यंत हर्षोल्लास के साथ स्वामी जी श्री जोरावरमल जी म० सा० के पास आपने संयम जीवन अंगीकार किया। उस समय वहाँ पन्नालाल जी म० सा० आदि भी विराजमान थे। स्वामी जी श्री हजारीमल जी म० सा० और स्वामी जी श्री ब्रजलाल जी म० सा० आपके बड़े गुरु भ्राता थे। आपकी दीक्षा के कुछ समय बाद आपकी माता श्री भी दीक्षित हुई।

दीक्षा लेते ही आपने मौन व्रत धारण करके संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण, जैन आगम, न्याय, दर्शन आदि का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। लगभग 20-22 वर्षों तक आपने मौन व्रत का पालन किया। इस एकनिष्ठ ज्ञानोपासना के कारण मुनि श्री ने अध्ययन, भाषण और लेखन मे प्रौढता प्राप्त कर ली। आपको बहुश्रुत, पंडित रत्न, आगम मनीषी आदि अनेकानेक उपाधियों से संबोधित किया जाने लगा। वि० स० 2004, वैशाख कृष्ण 2 को नागौर मे आप श्री को जयमल गच्छ के नवमे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। उस समय आपका नाम मिश्रीमल जी से बदलकर जसवंतमल कर दिया गया- यशवंत-यशस्वी। आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात आपके मन मे एक उथल पुथल भरी बेचेनी ही भरी रही। एकांत साधना, शांति-प्रिय, निर्लिस व्यक्ति को कभी भी पद की चाह, यश की लिप्साओ से दूर रहना ही पसंद होता है। आप श्री ने दृढ निश्चय के साथ आचार्य पद का त्याग कर दिया। ये आपकी महानता थी कि आपने अपनी साधना के लिए आचार्य जैसे प्रतिष्ठापूर्ण पद का विसर्जन कर दिया। आपका कहना था कि, मैं अनुशासन मे रह तो सकता हूँ, पर किसी को रख नहीं सकता।

इस पद त्याग से स्थानकवासी समाज मे एक बड़ी भारी क्रांति हुई। यह क्रांति थी-पद लिप्सा का लगाव कम और संघ की एकता का प्रबल भाव। इन दोनों विशिष्ट भावों ने वि० स० 2009 के सादडी मे सम्पन्न हुये विशाल साधू सम्मेलन मे कई स्वतंत्र संप्रदायों ने अपने अस्तित्व को गला कर श्रमण संघ को जन्म दिया। वि० स० 2033 मे आपका वर्षावास नागौर मे था, तब आपको श्रमण संघ के उपाध्याय पद से विभूषित किया गया। आपकी विद्वता और योग्यता से प्रभावित होकर, तथा सकल संघ के हार्दिक आग्रह पर वि० स० 2036 श्रावण शुक्ला1 को आचार्य सम्राट श्री आनंद ऋषि जी म० सा० ने 25 जुलाई 1979 को हैदराबाद मे आपको श्रमण संघ का प्रथम युवाचार्य घोषित किया। इससे श्री संघ मे हर्ष की लहर दौड़ गयी। बाद मे वि० स० 2037 चैत्र शुक्ल 10 को जोधपुर मे युवाचार्य चादर औढाई गई। आप स्वनाम धन्य थे-एक बार आप धनारी ग्राम मे पधारे। तब वहाँ एक खारे पानी का कुआं था, आपके चरण प्रभाव से उस कुवे का पानी अमृत समान मीठा हो गया। स्वभाव मे सहज मधुरता-गुणज्ञ दृष्टि होने के कारण आपका उपनाम "मधुकर" था। मधुकर मुनि की मधुरता, सरलता, विनम्रता आदि गुणो के कारण आपको "मीठा मिश्री" के नाम से भी जाना जाता है।

आचार्य सम्मट श्री आनंद ऋषि जी म० सा० के हार्दिक आग्रह पर श्रमण संघ को मजबूत बनाने और भावी योजनाओं पर विचार करने के उद्देश्य से आपने मारवाड से महाराष्ट्र की ओर उग्र विहार किया। इस विहार काल में आपके 60 वर्षों के संयम साथी-बड़े गुरुभाता श्री ब्रजलाल जी म० सा० का धूलिया में देवलोकगमन हो गया। आप दोनों की जोड़ी राम-लक्ष्मण के जैसी थी। नासिक में आचार्य श्री के साथ ऐतिहासिक चातुर्मास पूर्ण करने बाद वि० स० 2040, मार्गशीर्ष कृष्ण 7, दिनांक 26 नवंबर 1983 को नासिक में आपका आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। जिस चादर को आचार्य श्री आनंद ऋषि जी म० सा० ने दी, वो युवाचार्य श्री ने आचार्य भगवंत के श्री चरणों में पुनः समर्पित कर दी।

पूज्य गुरुदेव श्री मिश्रीमल जी म० सा० "मधुकर" उत्कृष्ट साहित्य शिल्पी भी थे। आपने दूरगामी दृष्टि रखते हुये 32 आगमों का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर प्रकाशित करवाने जैसा भागीरथी कार्य किया, (उल्लेखनीय है कि 16 आगमों का प्रकाशन आपके देवलोकगमन के पश्चात आपकी अंतेवासिनी शिष्या श्री उमराव कुँवर जी म० सा० "अर्चना" ने प्रबल पुरुषार्थ से करवाया) जिससे सभी संप्रदायों के साधू संत एवं जनमानस लाभान्वित हुये। आपका यह उपकार जैन समाज युगों युगों तक याद रखेगा। आप कुशल प्रवचनकार, कथाकार भी थे। आपने जैन कथामाला के 51 भाग भी लिखे। इसके अतिरिक्त साधना के सूत्र, अंतर की ओर, पर्युषण पर्व प्रवचन, तीर्थकर महावीर आदि अनेक पुस्तके लिखी। अहिंसा की विजय, तलाश, छाया, आन पर बलिदान, पिंजरे का पंछी आदि अनेकानेक उपन्यास भी आपने लिखे। आपकी अंतिम शिक्षा-रचना थी-जीओ तो ऐसे जीओ। आपके साहित्य जन-जन हितार्थ थे। सचमुच में आप जैसे सरल, मीठे, विद्वता के साथ विनम्र, साधू विरले ही होते हैं। आपके महाप्रयाण से संघ में जो क्षति हुई है, वो कभी भर नहीं सकती। -महावीर चंद नाहटा, अहमदाबाद - 9016184340

PANCHAKALYANA RITUALS AT ALADANGADI BASADI FROM DEC 26

Mangalore, Dec 22, 2012, The panchakalyana religious rituals of the renovated Doddabasadi situated at Aladangadi will be held between December 26 and 30. According to the Jain Agama Shastra, this Jain temple on the banks of Phalguni river was built 825 years ago by Queen Madhurakka Devi and her son Rayakumara. Timmannarasa Dr. Padma Prasad Ajila is the present hereditary managing trustee of the temple. Dharmasthala Dharmothana trust has donated a sum of Rs18 lakh to the renovation work and rest of the amount needed was raised from the devotees. Bhagawan Sri Parshwanath Swamy is the moola nayak of the Basadi. A magnificent manasthambha is the centre of attraction at the Basadi. The tile roofed Basadi is built according to Jain Vastu Shastra. According to Dr veereendra Heggde, "this jain temple is restored without altering the original structure. The Ajila ancestors consecrated Lord Bahubali Swamy onolathicsculpture at venoor after constructing this Dodda Basadi adjacent to the Ajila Aramane in Aladangadi, formerly known as Akshayapura, now it is in Belthangady taluk." The rituals will be performed under the guidance of Lalithakirthi Bhattaraka Swamiji of Karkala.

JAIN FESTIVAL ORGANISED AT MOOBBIDRI



A three-day National Jain Culture and Heritage Festival was organised at Moodbidri. The programme was organised by Bharatvarshiya Digamber Jain Teerthkshetra Committee, Mumbai, in association with Dhavalatraya Jainakashi Trust, Moodbidri, the events included seminars and cultural programmes on the premises of Tribhuvana Tilaka Choodamani Basadi, also called Thousand-Pillar Basadi. Addressing a gathering at the inaugural session, seer of Jain Math, Moodbidri, Charukeerti Bhattaraka Panditacharyavarya, said the math had prepared a Rs. 2-crore project for the renovation and conservation of 18 Jain temples in Moodbidri and its surrounding areas. He sought the cooperation of the committee to make the project a success. D. Veerendra Heggade, dharmadhikari of Shree Kshetra Dharmasthala, who inaugurated the festival, said the State

government had given Rs. 8 crore for the renovation and protection of Jain temples in the State in the past four years. Shubhachandra Jain, a retired professor from the Department of Jainology, Mysore University, spoke on the guru tradition of Moodbidri.



DESTRUCTION OF ANCIENT 6000 YEAR OLD JAIN TIRTH'S LORD NEMINATH'S IDOL AT NARLAI - RAJASTHAN - In Rajasthan near Ranakpur-Sadri (Pali District), there lies one ancient Jain Village called Narlai / Nadlai . There are several Jain Temples at Narlai. On 12th December, 2012, approx. in a 6000 year old Neminath Bhagwan Jain Tirth's, one Jain Idol was vandalized - destroyed by some anti jain people. By whom , same is still unknown. This Idol was on a mount called Narlai's Girnar Tirth and as per local history it was constructed by descendant of Lord Krishna. Narlai Jain Sangh must have hence kept name of this on Girnar as its dedicated to Jain communities 22nd Tirthankar Bhagwant Neminath. On whole mount there was only one ancient idol that was of Bhagwant Neminath. Narlai has one Adinath temple built originally by King Samprati. Source: Dhanpal Solanki Jain, E-Mail: dhanpal.congress@gmail.com

PETITION BY JAIN CENTRE OF AMERICA - PROTEST AGAINST DESTRUCTION OF 6000 YEAR OLD JAIN IDOL - Jai Jinendra Sadharmik Brothers and Sisters, some of you may already be aware about the unfortunate incident that occurred on Dec 12, 2012 at Narlai in Pali District Jain Temple, Rajasthan, where a 6000 years old idol of Lord Neminath was destroyed. Idol's head was dismantled, hands were damaged and silver ornaments were stolen. Just a couple of months ago, an image of Lord Mahavir was destroyed by miscreants in Lucknow, and before that, an image of Lord Adinatha was vandalized in Karnataka (Allur - Chitapur taluka, Gulbarga district). Occasionally, our spiritual leaders are beaten and even

killed, and the list goes on. These crimes and vandalism against Jains has been on the rise in India and abroad. JCA has strongly protested and condemned the above incidents and have requested Indian authorities to provide security to all Jain Centers/Temples in India. JCA is working with JAINA and other Jain Centers/Temples in USA, and is gathering signatures from all Sadharmiks as a token of protest against such violence against Jains in India and abroad. We urge all to please stop by at the JCA Office to sign in the sheet as a mark of their protest. Thank you. Sincerely, Jawahar Shetti, Chairman Rajesh Shah, President Cheryl Shah, Public Relations Officer, Website: www.nyjca.org, E-Mail: info@nyjca.org, Tel: (718)478-9141, Fax: (718)478-9144.

500 YEAR OLD BAGS OF GUNPOWDER FOUND NEAR JAISALMER JAIN TEMPLE

Dec 21, 2012, Jaisalmer: Over 1,500kg of gunpowder in five leather bags has been found near the Jain temple in the Sonar fort of Jaisalmer. The explosive is expected to be 500-years-old. The district administration has sought the Army's help to destroy it. Jaisalmer Vikas Samiti secretary Chandra Prakash Vyas said the gunpowder was found in a closed 'burj' (tower) by some labourers engaged in repair work. The 'burj' was closed for centuries. On getting the information, local authorities vacated nearby areas. Historian Nand Kishore Sharma said the explosives could be dated back to the time of Maharaj Loonkaran Singh in 1550 when the use of cannon was started. He said that even today five big cannons are kept at the sonar fort in Jaisalmer and generally the explosives were stored near the cannons. Possibly the explosives were stored in burj near the cannon placed near the Jain temple and it has come to light. The burj was lying closed for last many years.

JAIN MINORITY ISSUE

विश्व अल्पसंख्यक दिवस पर विश्व जैन संगठन ने रैली का सफल आयोजन किया



विश्व अल्पसंख्यक दिवस पर विश्व जैन संगठन ने जैन धर्म को वर्ष 1993 से राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग एक्ट के सेक्शन 2 सी के अंतर्गत स्वतंत्र व अल्पसंख्यक धर्म न घोषित किये जाने पर अपने संवैधानिक अधिकार पाने हेतु एक विशाल अधिकार रैली का सफल आयोजन राज.घाट से जंतर.मंतर तक किया! इस रैली में जैन महिलाएं व पुरुष हजारों की संख्या में केवल दिल्ली ही नहीं अपितु देश के दूसरों हिस्सों से भी आकर शामिल हुए! रैली में शामिल लोगों के हाथ में सरकार विरोधी नारें ले लिखें होकर बल्कि सरकार से निवेदन सम्बन्धी नारें लिखें थे। उपरोक्त रैली एक विशाल अधिकार सभा के रूप में

जंतर.मंतर पर जाकर परिवर्तित हो गयी! धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकार दिवस के पावन अवसर पर केंद्र सरकार को प्रेरणा करने पहली बार जैन धर्म के दिगम्बर संत श्री विहर्ष सागर जी महाराज ;ससंघद्धए श्वेताम्बर संत श्री नयपदम सागर जी महाराजए स्थानक संत उपाण श्री रविन्द्र मुनि जीए आचार्य श्री लोकेश मुनि जी व भट्टारक श्री रविन्द्र जी ने अपना सानिध्य इस सभा में दिया! सभी संतो ने अपनी मंगलमयी वाणी में केंद्र सरकार को जैनों को अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों के अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम के अंतर्गत धार्मिक अल्पसंख्यक घोषित करने हेतु प्रेरित किया।

सभी संतो ने सविधान के अंतर्गत अल्पसंख्यकों को दिए गए अधिकारों व भारत के अन्य प्राचीन मुख्य धर्मों में से जैन धर्म के प्राचीन होने आदि के विषय में बताया! जैनों को धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक धर्म घोषित करने हेतु मुस्लिम समाज से इमाम उमर अहमद इलियासीए ईसाई समाज से फादर डोमनिकए सिख समाज से श्री परमजीत सिंह चंडोक आदि ने अपना समर्थन दिया।

श्री संजय जैन ने कहा कि केंद्र सरकार कहती है कि टीण एमए एण आई मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यकता देने के लिए निर्देश न देने के लिए कहा हैए जबकि सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को वर्ष 2004 में बाल पाटिल जी के मुकदमे में साफ तौर पर लिखा था कि टीण एमएण आईण ए मुकदमे में राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यकता देने हेतु मामले को न लिया गया और न इस पर कोई निर्णय दिया गया और केंद्र सरकार को चार महीने के अंदर निर्णय लेने के आदेश दिएए परन्तु सरकार ने कोई निर्णय आज तक नहीं लिया!वेसे भी केंद्र सरकार के पास 17 मई 1992 को संसद में पारित अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 2 सी के अंतर्गत किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यकता देने का पूर्ण अधिकार है। श्री जैन ने कहा कि केंद्र सरकार ने भारत की जनगणना में धार्मिक आधार पर गिने जाने वाले प्रमुख सात धर्मों में से पांच धर्मों को अल्पसंख्यक धर्म बनाकर और हिन्दू धर्म को मुख्य धर्म बताकर जैन धर्म का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया। जैन तीर्थों पर नाजायज कब्जे किये जा रहे हैं। जैन मूर्तियों को खंडित किया जा रहा है। जिस देश के प्रधानमंत्री खुद एक अल्पसंख्यक समाज से हो और केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्री भी एक अल्पसंख्यक समाज से हो फिर भी जैनों की उपेक्षा क्यों की जा रही है। अधिकार सभा को जैन समाज की प्रमुख सामाजिक व धार्मिक संस्थायों के पदाधिकारीओं ने संबोधित किया श्री विपिन जैनए मीडिया संयोजक ने जानकारी दी कि संगठन के आह्वान पर पुरे देश में लगभग 130 जगहों पर शांतपूर्ण ढंग से केंद्र सरकार को जैन धर्म को अल्पसंख्यक धर्म घोषित करने हेतु अधिकार सभा करके ज्ञापन भेजे गए। विनीत जैन (महामंत्री - विश्व जैन संगठन) Courtesy: Pushpendra Muni, E-Mail : pushpendramuni@gmail.com, Shri Tarak Guru Jain Granthalaya, Guru Pushkar Marg, Udaipur, Rajasthan-313001.

AHIMSA & NON-VIOLENCE
SUPPORT PETITION - GUN CONTROL



Recent mindless shootings in America and killing of innocent children is really alarming. We do not know, how many more senseless and entirely preventable shootings have to occur before we do something about Gun Control. I am asking that you take a firm stand and make a positive change by restricting access to guns and saving lives. I don't have a gun. I don't want a gun. I don't need a gun. But somehow the guns always wind up in the hands of people crazy enough to use them irresponsibly and dangerously. This has to be stopped. Please do join and sign the petition by clicking the link: www.signon.org/sign/gun-control-now-1?source=s.em.mt&r_by=6534108 Thank you for your action!

The petition is to be delivered to: The United States House of Representatives, The United States Senate, and President Barack Obama.

LEATHER SKIN USED FOR DAL POLISHING



Dals include dried pulses, lentils, peas and beans, stripped of their outer hulls, and split. Beauty Without Cruelty was surprised when told that dals are polished with leather but, upon investigation, we discovered it was so ! One brand was marketing unpolished dals claiming we do not add marble powder (very harmful for intestines), oil polish (added fat), water polish or leather belt polish (animal skin touch)." Pictures of dal polishing machines with leather belts were found on the Internet so we got initial proof of dals being polished with leather. An inquiry was made with a dal mill owner in Gujarat. It was orally learnt - hold your breath - that tiger skin was used, especially to polish moong dal. Diffi cult to believe, given the protected status of the tiger in India, but we were told that tiger skins are commonly used for this purpose in North Indian mills. Our efforts to confirm this or to trace the sources of the

skins have not been successful yet. An inquiry was made with a dal mill owner in Gujarat. It was orally learnt - hold your breath - that tiger skin was used, especially to polish moong dal. Diffi cult to believe, given the protected status of the tiger in India, but we were told that tiger skins are commonly used for this purpose in North Indian mills. Our efforts to confi rm this or to trace the sources of the skins have not been successful yet. BWC then wrote to the India Pulses and Grains Association (Mumbai) and 28 manufacturers. Not one of them responded, indirectly proving that pulses and grains are polished with leather. Next, we wrote to the Indian Institute of Pulses Research at Kanpur. The explanation received from Prasoon Verma, Scientist-SG (ASPE) is reproduced below: "Regarding polishing of pulses, it is to inform that first grade dal (dehusked splits) is never polished. Polishing, though not recommended, is done for second and third grade dal. Edible oil, colour and powder are used to improve appearance of the product. Commonly leather belts are used for rubbing dal against screen to give shine and uniform look. Polishing is avoidable as thorough washing before cooking is required for polished dal. However, it is claimed that polishing improves storability of dal. Polishing is not an essential operation for any pulse." Conclusions: The use of leather for polishing dals is no different from the use of leather for producing varkh. Particular unpolished dals may be harmful GM produce containing animal genes. Not only dals, but also grains such as rice are polished. To the best of our knowledge, no leather is used in the process. Source: Compassionate Friend, Journal of Beauty without Cruelty -India, 4 Prince of Wales Drive Wanowrie Pune-411040, India, E-Mail: admin@bwcindia.org Website: www.bwcindia.org

FACT, NOT FANCY - PET PELTS



A dog-skin industry flourished for some years in Chennai, in the early 1980s. It was the brainchild of a research officer attached to the Municipal Corporation. The authorities, in a bid to reduce the city's stray dog population, announced that the owners of the dogs would have to claim them within 24 hours. Upto 120 unclaimed dogs were electrocuted daily by making them stand in a metallic cage and passing a high-voltage electric current through it. Flayers would then separate the skins from the stiff carcasses. The tanned leather was used for making leather goods like fancy cushions, wallets, handbags, jackets, footwear, vanity cases, and so on. (Chennai is home to the Central Leather Research Institute.). They then tried to export the

items, but luckily there were no takers for "dog leather," resulting in stocks being passed off as simply "leather". Eventually this ghastly trade ground to a halt. In comparison, the cat-and-dog-fur industries of China, Thailand and the Philippines have always flourished. Truly a horror story for dog- and cat-lovers... no wonder, after a long and vocal campaign focusing on Chinese fur products, supported by Sir Paul McCartney and others in 2007, the EU banned the cat and dog fur trade.

Dog and cat fur - However, items made from cat and dog furs and skins are being exported to other countries including India, and they are not labelled as such. One finds attractive, cute decorative fur items displayed in certain shops, even sold on roadsides. People buy them because they are inexpensive, not realising their origins. These cat-and-dog-fur knick-knacks are imported mainly from China and are usually not labeled. If they are labeled, cat fur may be called Katzenfelle, Goyangi, house- wild- mountain- or wild-cat; whereas dog fur could be labeled age-wolf or sobaki and dog skin as special, lamb, or mountain goat skins. The finished products range from golf gloves, handbags, and jackets to bed-sheets with fancy home decorations thrown in. Given the staunch relationships between humans and dogs/cats, people who suspect the origins of such items to be the skins and furs of companion animals never buy them. But, unfortunately, there are many other unsuspecting buyers. They cannot imagine that real fur could be so cheap, leave alone that they may be pets' pelts. The Coalition to Abolish the Fur Trade has found dogs hanging by their necks from wire nooses with water poured down their throats through a hose until they drowned, for good measure. Many were skinned alive. These were once someone's pets, rounded up, transported in sacks and crates, and held in dingy buildings, often without food or water. Like the EU, India needs to impose a ban on imports of dog and cat fur/skins. Beauty Without Cruelty approached the Ministry of Commerce, Government of India, but the ban hasn't happened yet. Meanwhile, we request readers to remember the cost of an item should never be the criterion for judging whether it is of animal origin or not. Inexpensive stuff can contain fur, silk, leather - in this case an innocent pet cat or dog's pelt.

Author & Source: Mr. Nirmal Nishchit, Compassionate Friends, Beauty Without Cruelty, An International Educational Charitable Trust for Animal Rights, 4 Prince of Wales Drive Wanowrie Pune-411040, India, Tel: +91-20-26861166 Fax: +91-20-2686-1420 E-Mail: admin@bwcindia.org Website: www.bwcindia.org

VEGETARIAN IN MUMBAI? WELCOME TO THE MEAT-FREE NEIGHBORHOOD



Vegetarians in Mumbai first began keeping meat-eaters out of their apartment blocks a few years ago, pressuring residents' associations to keep out carnivorous newcomers. Later, the restaurants in these neighborhoods took meat off their menus for fear of offending vegetarian customers. Now, the movement has gone a step further with grocery stores and supermarkets keeping meat and eggs off the shelves. Even sandwiches, salads or desserts that might contain egg or meat are not stocked. Mumbai's vegetarians aim to turn their neighborhoods into vegetarian enclaves. In a supermarket in Malabar Hill — home to wealthy families, most of whom are staunchly vegetarian — none of these items is available. Known as India's most cosmopolitan city, Mumbai has areas where global fast food joints such as Pizza Hut and McDonald's have taken all meat items off their menus. When these chains first entered the country, they were aware of religious sensibilities and never served pork or beef to avoid antagonizing Muslims and Hindus. Instead, they served chicken, mutton, fish and eggs. Mumbai's cosmopolitanism has also generated a backlash against meat-eating by ethnic groups who see it as a sign of Westernization. Many of the city's neighborhoods that are also set up along ethnic lines, making the city's vegetarians more pushy than in other cities. So in areas of Mumbai such as Malabar Hill, Cuffe Parade and Kemps Corner, their menus are totally vegetarian.

शाकाहारी लोग सावधान। क्या आप भी बोन चाइना के बर्तन प्रयोग करते हैं?



ऐसे बर्तन आज कल हर घर में देखे जा सकते हैं, इस तरह की खास क्राकरी जो सफेद, पतली और अच्छी कलाकारी से बनाई जाती है, बोन चाइना कहलाती है। इस पर लिखे शब्द बोन का वास्तव में सम्बंध बोन (हड्डी) से ही है। बोन चाइना एक खास तरीके का पॉर्सिलेन है जिसे ब्रिटेन में विकसित किया गया और इस उत्पाद का बनाने में बैल की हड्डी का प्रयोग मुख्य तौर पर किया जाता है। इसके प्रयोग से सफेदी और पारदर्शिता मिलती है।

बोन चाइना इसलिए महंगा होती है क्योंकि इसके उत्पादन के लिए सैकड़ों टन हड्डियों की जरूरत होती है, जिन्हें कसाईखानों से जुटाया जाता है। इसके बाद इन्हें उबाला जाता है, साफ किया जाता है और खुले में जलाकर इसकी राख प्राप्त की जाती है। बिना इस राख के चाइना कभी भी बोन चाइना नहीं कहलाता है। जानवरों की हड्डी से चिपका हुआ मांस और चिपचिपापन अलग कर दिया जाता है। इस चरण में प्राप्त चिपचिपे गोंद को अन्य इस्तेमाल के लिए सुरक्षित रख लिया जाता है। शेष बची हुई हड्डी को १००० सेल्सियस तापमान पर गर्म किया जाता है, जिससे इसमें उपस्थित सारा कार्बनिक पदार्थ जल जाता है। इसके बाद इसमें पानी और अन्य आवश्यक पदार्थ मिलाकर कप, प्लेट और अन्य क्राकरी बना ली जाती है और गर्म किया जाता है। इन तरह बोन चाइना अस्तित्व में आता है। ५० प्रतिशत हड्डियों की राख २६ प्रतिशत चीनी मिट्टी और बाकी चाइना स्टोन। खास बात यह है कि बोन चाइना जितना ज्यादा महंगा होगा, उसमें हड्डियों की राख की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या शाकाहारी लोगों को बोन चाइना का इस्तेमाल करना चाहिए? या फिर सिर्फ शाकाहारी ही क्यों, क्या किसी को भी बोन चाइना का इस्तेमाल करना चाहिये। लोग इस मामले में कुछ तर्क देते हैं। जानवरों को उनकी हड्डियों के लिए नहीं मारा जाता, हड्डियां तो उनको मारने के बाद प्राप्त हुआ एक उप-उत्पाद है। लेकिन भारत के मामले में यह कुछ अलग है। भारत में भैंस और गाय को उनके मांस के लिए नहीं मारा जाता क्योंकि उनकी मांस खाने वालों की संख्या काफी कम है। उन्हें दरअसल उनकी चमड़ी और हड्डियों के मारा जाता है। भारत में दुनिया की सबसे बड़ी चमड़ी मंडी है और यहां ज्यादातर गाय के चमड़े का ही प्रयोग किया जाता है। हम जानवरों को उनकी हड्डियों के लिए भी मारते हैं। देखा जाए तो वर्क बनाने का पूरा उद्योग ही गाय को सिर्फ उसकी आंत के लिए मौत के घाट उतार देता है। आप जानवरों को नहीं मारते, लेकिन आप या आपका परिवार बोन चाइना खरीदने के साथ ही उन हत्याओं का साड़ीदार हो जाता है, क्योंकि बिना मांग के उत्पादन अपने आप ही खत्म हो जायेगा।

चाइना सैट की परम्परा बहुत पुरानी है और जानवर लम्बे समय से मौत के घाट उतारे जा रहे हैं। यह सच है, लेकिन आप इस बुरे काम को रोक सकते हैं। इसके लिए सिर्फ आपको यह काम करना है कि आप बोन चाइना की मांग करना बंद कर दें। Source:

Mayank Pandya, E-Mail : pandya_mayank2005@yahoo.com

AWARDS & HONOURS

NISHTHA JAIN'S "GULABI GANG" HONOURED WITH BEST FILM AWARD IN DUBAI FILM FESTIVAL

December 16th, 2012, Nishtha Jain's "Gulabi Gang" won Best Film Award in Muhr Asia Africa documentary section at the 9th Dubai Film Festival.

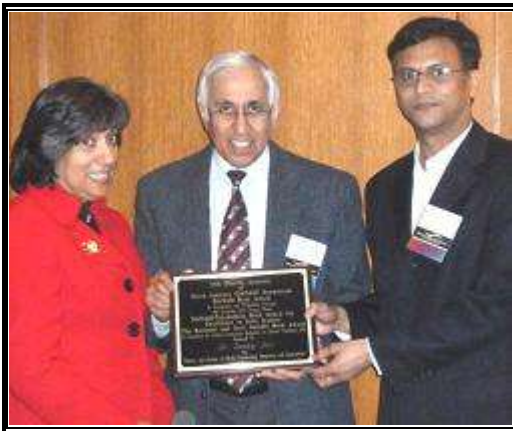


Awards were announced at the closing ceremony on December 16, 2012. About the film - Bundelkhand in central India, a region notorious for its rebels-turned-armed bandits, is witnessing a new kind of rebellion with an unusual cast of characters. These are the pink sari-clad women of the Gulabi Gang, who use words as weapons - demanding their rights, submitting petitions and haranguing corrupt officials. They travel long distances by cart and tractor, bus and train, to wrest justice for women and dalits, undeterred by sneering policemen and condescending bureaucrats. Sampat Pal, the group's founder, is a rough-and-tough woman with a commanding personality. Despite being born into a traditional family and married off early, she has evolved

her own brand of feminism and egalitarian politics. Constantly on the move, today she may be found investigating the suspicious death of a young woman, tomorrow protesting against a corrupt official. The Gulabi Gang, with a membership of thousands, is active across many districts. Suman Singh, one of the leaders, has made it her personal mission to send a land-grabbing village chief behind bars, along with his murderous henchmen. But what's to be done when the brother of a fellow activist carries out an "honour killing"? Husna, a longtime member, is forced to choose between family loyalties and all that their fragile movement stands for. The Gang is still very new, and many of its members still steeped in conservative values. A whole village connives in protecting the perpetrators of violence, aided by those in power. Everywhere, the Gang encounters resistance to its notions of gender equality and efforts for social change. The film pulls us into the centre of all these blazing conflicts: we are moved by the women's courage and determination, while their frustrations and disappointments mirror our own. As it travels with them through the dusty and desolate landscape, Gulabi Gang uncovers a complex story, disturbing yet heartening.

US UNIVERSITY HONOURS DR. PANKAJ JAIN WITH BEST BOOK AWARD ON ECOLOGY

At the recently concluded DANAM (Dharma Academy of North America) conference held in conjunction with the American Academy of Religion Conference in Chicago, Dr. Pankaj Jain was chosen to be the recipient of the annual book prize for his book *Dharma and Ecology of Hindu Communities: Sustenance and Sustainability*, published by Ashgate in UK in 2011.



Reviewing the book Professor Chris Chapple mentioned that Pankaj Jain has created a pioneering book in the important and newly emerging field of religion and ecology. In *Dharma and Ecology of Hindu Communities: Sustenance and Sustainability*, he presents research on three communities in India that practice unique forms of environmental activism. The book begins with an analysis of conceptual approaches to religious environmentalism in India, including devotional and ascetic models. The bulk of the book examines three vital communities in different regions of India: the Svadhyaya movement, the Bishnoi community, and the lifestyle of the Bhil tribal community. The book ends by suggesting that the flexibility of the Indic ethos of dharma lends itself to providing tools to cope with impending ecological challenges. By spending time with each of these communities, by recording detailed interviews, and by translating core

documents for the Bishnoi and the Svadhyayis, Pankaj Jain has done a great deal to advance our knowledge of indigenous ecological knowledge systems in India. This book is ideal for an upper division or graduate course in religion and ecology and

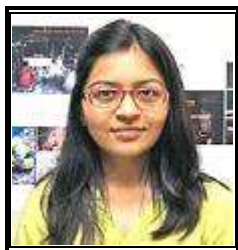
should be part of every college and university library collection. The book was also chosen for the Uberoi Foundation Book Award in 2011 and has received appreciative reviews in the Journal of Asian Studies, Journal of Dharma Studies, Environmental Values, International Journal of Hindu Studies, Oxford Journal of Hindu Studies, Philosophy East & West, Religious Studies Review, Sophia, Journal for the Study of Religion, Nature & Culture, Worldviews: Global Religions, Culture, & Ecology, and in Asia Times. Courtesy: Dr. Sulekh C. Jain, Houston, USA.

RAJNISH JAIN BAGS IMC INCLUSIVE INNOVATION AWARD



Uttarakhand-based Rajnish Jain has been conferred the IMC Inclusive Innovation Awards 2012 for his product "Electricity and Cooking Coal from Pine Needles". The award, instituted by the Indian Merchants Chamber (IMC), recognises products or service innovations which are inclusive, capable of commercial exploitation, sustainable and scalable. Jain received financial support of Rs.20 lakhs at the ceremony. Jain's product helps in harnessing the destructive energy of pine needles for meeting energy needs and improves rural livelihoods. The central Himalayas have 1.5 million hectares of pine forests, where excessive forest fires spread by pine needle litter destroys natural resources. Jain's company, Avani, converts this destructive biomass into clean, affordable electrical and cooking energy for driving economic growth. "The award is a commendable project to discover the hidden ability of an innovation, provide a useful platform to an entrepreneur to showcase his talent and help the society to become technologically advanced," IMC President Niranjana Hiranandani said. Jain was selected from five short-listed entries through a question and answer session conducted by the jury.

ISHITA JAIN WINS HONG KONG DESIGN CENTER AWARD



Ahmedabad: A ceramic and glass design student from National Institute of Design jointly won Hong Kong Design Center's (HKDC) Design For Asia (DFA) student award on December 6 at Hong Kong. Ishita Jain, the award winner, had worked closely with traditional glass bangle makers of Purdilnagar in Uttar Pradesh and had prepared the student project on the theme 'design for change'. Talking about the project, Jain said that she got interested in bangle makers as they make classic joint-less bangles on indigenous wood fire furnace and there are only a handful of artisans keeping the tradition alive. "This community's cultural history is intertwined with their bangle making technique. The craft is the livelihood of the Muslim community of Purdilnagar, who are its sole practitioners in the world. Today, the major challenge faced by this community is visibility, livelihood and self-respect. An intense field study of the area was an insight into the socio-economic complexities," she said. The project supported by NID Ahmedabad aimed to bring visibility to the cluster by marketing traditionally made bangles into urban spaces, thus integrating them into the mainstream design consciousness. Exposure to diverse market segments will give them an opportunity to express their individuality and augment their incomes, said NID officials who will carry forward the project.

RAVI JAIN ELECTED JOINT SECRETARY IN DDCA, NEW DELHI

Dec 22, 2012, New Delhi: Ravi Jain has been elected the joint secretary of the Delhi and District Cricket Association (DDCA) in its elections. Apart from Jain, Ravinder Manchanda, Anil Jain, Salil Seth, Dinesh Saini, Dinesh Sharma and Subhash Sharma were also elected as joint secretaries. Ashok Sharma, Harsh Sharma, Siddharth Singh, S K Choudhury, Surya Prakash, Vikas Katyal and Krishnath Agarwal were elected as directors.

JAIN STUDIES

CLAREMONT LINCOLN UNIVERSITY/ INTERNATIONAL SCHOOL FOR JAIN STUDIES OFFERS 40 FELLOWSHIPS

The Center for Jain Studies at Claremont Lincoln University invites participants to study Jain Dharma at the International School for Jain Studies in India this summer. Faculty, graduate students, and undergraduate students with an academic background, or strong interest, in the Indic traditions are encouraged to apply for this heavily subsidized immersion experience. Prospects have the choice of applying to one of two fellowship programs:



1. The 4-week program (June 1-June 30): This fellowship program offers an ideal introduction to India, the Dharma traditions, and Jainism. In four weeks, students will acquire proficiency in Jain Studies, and be prepared to undertake more advanced research in the future. Students can earn 3 graduate or undergraduate semester credits for completing this program. Up to 20 fellows will be admitted into the four-week program. You must be a senior undergraduate student, or a graduate student, at the

start of the four-week program to be considered for admission. To apply, please contact Lidiya Potapenko, Program Director, E-Mail : lpotapenko@claremontlincoln.org

JAINISM IN CZECH REPUBLIC - DR. VINOD KAPASHI FROM LONDON SHARES HIS EXPERIENCE

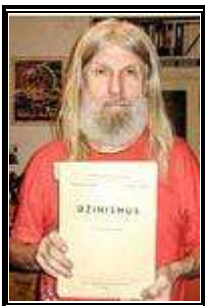
Jainism is not a known religion in some of the countries of the world. One will hardly see any Jain or a Jain temple in countries which were under the communist rule. Czech Republic is one such country. Previously it was Czechoslovakia but in 1993, Slovakia and Czech Republic became two separate countries.



There are hardly any Jains living in Czech Republic and consequently no Jain organization or a Jain temple there either. But in spite of this, it is most heartening to see that Jainism is being taught in the most prestigious Charles University in Prague. Charles University is more than 700 years old with buildings spread in many parts of Prague. In one of the buildings, one will find that many religions are taught regularly. Jainism is one such religion. Question now arises who teaches Jainism and is there any one taking interest in Jain studies. To find the answers to this question one has to go back a few years in the history of Czechoslovakia. History tells us that it was a man called Otokar Pertold who came across Jain books and studied Jainism in depth. The following paragraph about Pertold can be seen in the Google Search.

"Otokar Pertold (21.3.1884 Jaromer-3.5.1965 Prague), was a Czech indologist, historian of religion and ethnologist. He was the first professor of religion on the Charles University in Prague. He wrote many books on religions, especially Eastern ones. He was very fond of Jainism and wrote this book with great admiration. Thanks to him the "Oriental-ni Ustav v Praze" has most of the Jain scriptures in Ardhamagadhi"

Otokar Pertold first wrote a book on Jainism in 1924 but could not publish it during the communist regime. He re-wrote the book again in 1961 and then got it published in Prague in Czech language because political repression had almost died down. The book explains Jainism in more than 200 pages. It is a remarkable book in the Czech language. However, Pertold did not teach Jainism in Prague. It is another remarkable man, Josef Bartosek, who now teaches Jainism to the Czech students there. Josef has lived in India for a few years and has also studied Jainism. His interest in Jainism grew after reading Pertold's book on Jainism. He still has an original copy of Pertold's book. He has acquired lots of other books too on Jainism. Now Prof. Josef Bartosek runs regular classes in Jainism in the Charles University. Prof. Bartosek and ISJS invited Dr. Vinod Kapashi and his wife Sudha (from London, U.K) to go to Prague. On 26 November 2012, they did just that and give a lecture (in the class of Prof. Bartosek) on Jainism and also demonstrated how a Jain 'Snatra Pooja' can be performed. It was not easy or practical to take everything from London but they took all basic things (without Trgadu) required for a Jain Pooja. Both Dr. Kapashi and his wife performed the pooja in



the class itself, explained the whole procedure and also delivered a lecture on Jain philosophy. The Pooja ceremony and the lecture were attended by 24 students. At the end an Aarti was also performed after the pooja. Many students asked Dr. Kapashi and his wife to tie the 'Raksha Potlis on their wrists as well.

About Josef Bartosek, Dr. Kapashi says "he lives a very simple life like a true Jain shravak in Prague. He does not keep a car or a TV set. His wife and children are very well used to managing without these facilities. He was first trained as an Engineer but could not work under the communist regime. He then travelled to Glasgow (U.K) and studied further. Later he went to India and attended International Summer School for Jain Studies run by ISJS in 2010. This helped him a great deal in understanding the Jain path and its philosophy. He is an environmentalist in true sense". Prof. Bartosek plans to repeat this positive experience in future and invite more practicing Jains from many places to Prague as Guest lecturers. Prof. Bartosek can be reached at E-Mail : Josef.Bartosek@seznam.cz

JAINA CONVENTION 2013



JAINA is organising its 17th Biennial JAINA Convention to be held in Novi, Michigan (a suburb of Detroit) from July 4th to July 7th, 2013. This is a premier event of America based Jain community. This time the event is being hosted by Jain Society of Greater Detroit. The theme of this convention is Jainism: The Global Impact and it will showcase the positive impact Jain principles have made around the world and how they

can continue to make the world a better place to live. Registrations are now open. This year's convention highlights will be, Religious & spiritual discourses by prominent sadhu, sadhvis & scholars, Programs on improving Quality of Life (Health & Well-Being), Entrepreneurship and Professional Networking, Family and community reunions and Separate programs for Jain Networking Forum and Youth. For further details, Contact Mr. Prem Jain, Convener, www.convention.jaina.org/2013, E-Mail : welcomedetroit2013@gmail.com

The convention details are summarised herein below.

Details	Welcome Program	Cultural Program*	Jains Got Talent
When is the program?	July 4th, 2013	July 5th, 2013	July 4th & July 5th, 2013
What kind of program?	Dance Drama	Choreographer's choice*	Talent competition
What is the age limit?	Age 10 & above	Depends on Choreographer*	No Age limit

HINDU COUNSEL KENYA ORGANISES DONATION DRIVE FOR JAIPUR FOOT FOUNDATION

The Hindu Council of Kenya held a donation drive of wheel chairs for the Jaipur Foot Foundation at the Jalaram Temple on December 2. It was a highly dignified affair with the chief guest being Vice-president Kalonzo Musyoka and his wife Pauline. The children were awed to meet a state couple and the Jaipur Foot Foundation was deeply honoured too.

READER'S NOTES

I am writing on behalf of a UK based egroup called Jain Vegans committed to reducing himsa, in particular the himsa inflicted on millions of farming animals. Thank you for your latest issue of Ahimsa Times, especially all the suggestions for stopping animal abuse. We, however, felt concern that no mention was given to immense himsa inflicted unknowingly on cows by Jains and vegetarians in order to obtain their milk for our use.

Let me summarise the process in modern commercial dairies:

- To produce milk, a cow has to give birth, so she is artificially inseminated (sexually violated).
- The newborn calf is normally separated from her mother within 1-2 days, which is extremely traumatic for both.

- Male calves are seen as waste (as they eat a lot but don't produce milk) so are killed shortly after birth or sold for meat/leather production.
- Female calves are usually kept on to replace their mothers as milk producers.
- The mother is made to bear a calf annually and milked until 5-6 years of age, until her milk yield drops. As it is now not profitable to keep her alive (naturally, she could live for 20-25 years), and she can be replaced in the dairy by her daughters, she is sold for slaughter.
- Cows are often mistreated on farms and whilst being transported for slaughter

This is a common occurrence worldwide, including in commercial Indian dairies. To make matters worse, the banks provide loans to support and encourage this practice, due to its high profitability. One of our members, Sagar K. Shah reported his experiences of this when he helped develop ICICI loan products for dairy farmers in India in 2009.

You can read his article here: www.herenow4u.net/index.php?id=68140. You may also want to watch footage of horrific cruelty inflicted on cows in Indian tabelas, filmed by PETA India: www.youtube.com/watch?v=CE9DlnqZxkU. Another point we'd like to suggest is the recommendation of supporting animal sanctuaries/panjrapurs which support cows and other animals without exploitation. A list of these in the UK are here: www.shambhus.co.uk/animal-sanctuaries. Unfortunately, many animal shelters exploit or euthanise the animals they take in. With this in mind, I hope you would agree with us that for Jains wanting to reduce himsa, being vegetarian is no longer enough, and that going vegan is the next logical step. All health requirements can be met by a vegan diet - for more information please check www.vegansociety.com/lifestyle/nutrition/. Fortunately, a traditional Indian vegetarian diet can easily be made vegan by replacing butter/ghee, yoghurt and milk with plant based alternatives. Tips and advice can be found here: www.indianvegan.com/home.php. Please feel free to contact Jain Vegans should you have any other questions or comments. To sign up to the Jain Vegans egroup go to: www.jainvegans.org. Minal Shah (on behalf of Jain Vegans)

RECENT JAIN VIDEOS

Shrimad Rajchandra's Atma Siddhi Shaastra by Anup Jalota and Induben Dhanak. Click the link: www.youtube.com/watch?v=wBUv64S3EoI

Girnar Mahima. Please Click Link: www.youtube.com/watch?v=8m_g2IAaUGk

Narlai Jain Tirth's vandalism - A video about 6000 year old Narlai Jain Tirth's vandalism & theft was found on youtube at www.youtu.be/evGuBt8aORQ & www.narlaijain.com/news.html. Earlier Lucknows Jain idol was damaged and before same a karnataka's 1000 year old Lord Adinath's idol was damaged. Courtesy: E-Mail: philapradip@gmail.com

Voice for Animals - Be kind towards living being. Very interesting speech. A video speech on being a Vegetarian by former CEO of City Bank, Philip Wollen This video is speaking up for the silent animals, without the protection of Law. Our present laws only protect humans. www.youtube.com/watch?v=U1wAsjuqEho

MISCELLANEOUS

IMPORTANT HEALTH TIPS - BY DR. NEMICHAND CHHAJED

1. Answer Phone by left ear.
2. When battery is low to the last bar do not answer the Phone as the Radiation is 1000 times more the normal.
3. No heavy meals after 7 p. m.
4. Drink more water in the morning, Less at night.
5. Best sleeping time is from 10 p.m. to 4 a. m.

6. Do not lay down immediately after taking medicine.

7. Drink ward water early morning (Half litlr water & add gogery) Dr. Nemichand Chhajed, Telephone No. 98-2001-7134

FESTIVALS

IMPORTANT DATES OF 2013 AS PER JAIN STHANAKWASI TRADITION

वर्ष 2013 जैन पर्व व महापुरुष जयन्तियाँ।- संकलन - पुष्करवाणी ग्रुप, उदयपुर

10 जनवरी 2013	मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म० स्मृति दिवस
27 जनवरी 2013	जैनधर्मोपदेष्टा श्री फूलचंद जी म० (पुष्प भिक्खू) स्मृति दिवस
04 फरवरी 2013	श्रमण संघीय प्रथम आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म० स्मृति दिवस
05 फरवरी 2013	चमत्कारी श्री रुपचंद जी म० (पंजाबी) जन्म दिवस
10 फरवरी 2013	खादीधारी श्री गणेशीलाल जी म० स्मृति दिवस
14 फरवरी 2013	आचार्य सम्राट् श्री रघुनाथ जी म० जन्म दिवस
19 फरवरी 2013	आचार्य सम्राट् श्री पूनमचंद जी म० दीक्षा दिवस
14 मार्च 2013	श्रमण संघीय तृतीय आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म० दीक्षा दिवस
16 मार्च 2013	जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म० दीक्षा दिवस
27 मार्च 2013	होली चातुर्मास
28 मार्च 2013	श्रमण संघीय द्वितीय आचार्य श्री आनंदऋषि जी म० स्मृति दिवस
30 मार्च 2013	आचार्य सम्राट् श्री तिलोकऋषि जी म० जन्म दिवस
03 अप्रैल 2013	वर्षोत्तप प्रारम्भ
05 अप्रैल 2013	युगप्रधान आचार्य सम्राट् श्री अमरसिंह जी म० दीक्षा दिवस
16 अप्रैल 2013	आयंबिल ओली प्रारम्भ
22 अप्रैल 2013	आचार्य सम्राट् श्री सुजानमल जी म० स्मृति दिवस
22 अप्रैल 2013	विश्व संत उपाध्याय गुरुदेव श्री पुष्कर मुनि जी म० स्मृति दिवस
24 अप्रैल 2013	भगवान महावीर जन्म कल्याणक 2612 वां
12 मई 2013	आचार्य सम्राट् श्री अमरसिंह जी म० (पंजाबी) दीक्षा दिवस
13 मई 2013	अक्षयतृतीया - वर्षोत्तप पारणा महोत्सव एवं श्रमण संघ स्थापना दिवस
14 मई 2013	अध्यात्मयोगी चमत्कारी श्री ज्येष्ठमल जी म० स्मृति दिवस
21 मई 2013	महावीर संघ स्थापना दिवस
21 मई 2013	श्रमण संघीय तृतीय आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म० स्मृति दिवस व राजस्थान सरकार द्वारा सम्पूर्ण राजस्थान में अहिंसा दिवस घोषित
24 मई 2013	आचार्य सम्राट् श्री जयमल जी म० स्मृति दिवस
01 जून 2013	आचार्य सम्राट् श्री सुजानमल जी म. स्मृति दिवस

05 जून 2013	श्रमण संघीय चतुर्थ आचार्य सम्माट् श्री शिवमुनि जी म० दीक्षा दिवस
19 जून 2013	आचार्य सम्माट् श्री जीतमल जी म० जन्म दिवस
19 जून 2013	विश्व संत उपाध्याय गुरुदेव श्री पुष्कर मुनि जी म० दीक्षा दिवस
21 जून 2013	महास्थविर श्री ताराचंद जी म० दीक्षा दिवस
08 जुलाई 2013	आचार्य सम्माट् श्री कांशीराम जी म० जन्म दिवस
13 जुलाई 2013	श्रमण संघीय प्रथम आचार्य श्री आत्माराम जी म० दीक्षा दिवस
22 जुलाई 2013	चातुर्मास प्रारम्भ एवं गुरुपूर्णिमा
07 अगस्त 2013	श्रमण संघीय द्वितीय आचार्य श्री आनंदऋषि जी म० जन्म दिवस
20 अगस्त 2013	मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म० जन्म दिवस
24 अगस्त 2013	आचार्य सम्माट् श्री सुजानमल जी म० जन्म दिवस
28 अगस्त 2013	उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म० 'कमल' स्मृति दिवस
02 सितम्बर 2013	पयुषण महापर्व प्रारम्भ
04 सितम्बर 2013	बडा कल्प - भगवान् महावीर जन्म कल्याणक (कल्पसूत्र अनुसार)
09 सितम्बर 2013	संवत्सरी महापर्व
10 सितम्बर 2013	आचार्य सम्माट् श्री ज्ञानमल जी म० स्मृति दिवस
12 सितम्बर 2013	आचार्य सम्माट् श्री तुलसीदास जी म० स्मृति दिवस
16 सितम्बर 2013	श्रमण संघीय प्रथम आचार्य श्री आत्माराम जी म० जन्म दिवस
17 सितम्बर 2013	श्रमण संघीय चतुर्थ आचार्य श्री शिवमुनि जी म० जन्म दिवस
18 सितम्बर 2013	अनन्त चतुर्दशी
19 सितम्बर 2013	आचार्य सम्माट् श्री पूनमचंद जी म० स्मृति दिवस
04 अक्टूबर 2013	आचार्य श्री धर्मसिंह जी म० स्मृति दिवस
11 अक्टूबर 2013	नवपद ओली प्रारम्भ
12 अक्टूबर 2013	आचार्य सम्माट् श्री तुलसीदास जी म० जन्म दिवस
17 अक्टूबर 2013	युगप्रधान आचार्य सम्माट् श्री अमरसिंह जी म० जन्म दिवस, महास्थविर दादा गुरुदेव श्री ताराचंद जी म० एवं विश्व संत उपाध्याय गुरुदेव श्री पुष्कर मुनि जी म० जन्म दिवस
18 अक्टूबर 2012	नवपद ओली समाप्त
18 अक्टूबर 2012	आचार्य सम्माट् श्री अमरसिंह जी म० (पंजाबी) स्मृति दिवस
01 नवम्बर 2013	श्रमण संघीय तृतीय आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म० जन्म दिवस
03 नवम्बर 2013	भगवान् महावीर निर्वाण दिवस, दीपावली महापर्व
04 नवम्बर 2013	भगवान् महावीर निर्वाण संवत् 2540 प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा
05 नवम्बर 2013	भाईदूज
07 नवम्बर 2013	ज्ञान पंचमी, लाभ पंचमी, आचार्य सम्माट् श्री जीतमल जी म० जन्म दिवस
16 नवम्बर 2013	महास्थविर दादा गुरुदेव श्री ताराचंद जी म० स्मृति दिवस

17 नवम्बर 2013	चातुर्मास समाप्त, आचार्य श्री हरिभद्रसूरी जन्म दिवस एवं कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य जन्म दिवस
15 नवम्बर 2013	जैन दिवकार श्री चौथमल जी म० जन्म दिवस
07 दिसम्बर 2013	परम श्रद्धेय श्री फकीरचंद जी म. जन्म दिवस
11 दिसम्बर 2013	आचार्य सम्राट् श्री पूनमचंद जी म० दीक्षा दिवस, आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म० दीक्षा दिवस एवं खादीधारी श्री गणेशीलाल जी म० दीक्षा दिवस
10 दिसम्बर 2013	मेवाड़ प्रवर्तक श्री अंबालाल जी म० दीक्षा दिवस
16 दिसम्बर 2013	युवाचार्य मधुकर मुनि स्मृति दिवस
20 दिसम्बर 2013	आचार्य सम्राट् श्री ज्ञानमल जी म० दीक्षा दिवस एवं महान चमत्कारी गुरुदेव श्री ज्येष्ठमल जी मजन्म दिवस

Source & Courtesy: Pushpendra Muni, E-Mail : pushpendramuni@gmail.com, Shri Tarak Guru Jain Granthalaya, Guru Pushkar Marg, Udaipur, Rajasthan-313001

NEWS FROM SYDNEY JAIN MANDAL, AUSTRALIA

2012 WRAP-UP - ACTIVITIES SYDNEY JAIN MANDAL



2012 has been a very busy, exciting and innovative year for Sydney Jain Mandal in Australia. The year saw many new & exciting initiatives that were launched and successfully completed and created a new buzz in Jain Community. Some of these were covered in earlier editions of Ahimsa Times. The community celebrated several programmes and the same were attended enthusiastically in large numbers. During the year, the main activities were Mahavir Jayanthi Celebrations, Duslakshini Parva Celebrations, Padmavati Matta Ka Jagaran, Fund raising for Jain Temple, Mahavir Nirvaan Celebrations, Jains in Australia launched Matrimonial Website, etc. The future mission of

the community is - Building Jain Temple, Jain Matrimonial supports and increased Youth Activities. Sunil Jain, E-Mail: skj2125@hotmail.com

View this blog for recent tax & financial information / articles

www.anilkumarjainca.blogspot.in

DISCLAIMER - Although AHIMSA TIMES NEWS uses its best efforts to ensure the accuracy of the content on the site, sometimes, errors, mistakes or inaccuracies may creep in inadvertently. We make no guarantees as to the accuracy, correctness or reliability of the contents. We may also change the content of this site, at any time, without prior notice. In no event shall Ahimsa Times be liable to anyone for any damages of any kind arising out of or in connection with the use of this service. You agree to indemnify and hold Ahimsa Times in harmless from any and all claims, liabilities, damages, costs and expenses including lawyer's fees, arising from any use of any information from this. We also request all over readers to inform us of any inaccuracies, omissions and errors etc. noticed by them so that necessary corrections can be timely incorporated.

**WE HEARTILY WELCOME FOLLOWING NEW MEMBERS WHO HAVE JOINED
WWW.JAINSAMAJ.ORG DURING THE MONTH OF JANUARY 2013**

1. Rupesh Anantrai Gandhi,Swetambar,Mumbai,Maharashtra,Business
2. Suvidh Mehta,Swetambar,Jamnagar,Gujarat,Engineer
3. Bahubali Ghulannavar,Digambar,Jamakhandi,Karnataka,Student
4. Abhishek Jhagarawat,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Service
5. Gautam Jain,Swetambar,Yamuna Nagar,Haryana,Arts
6. Vijay Kumar Lungade,Digambar,Nanded,Maharashtra,Service
7. Mohit Shah,Swetambar,Chandrai,Rajasthan,Student
8. Swaroop Chand Jain,Swetambar,Ratlam,Madhya Pradesh,Government
9. Mohan Lal Shah,Swetambar,Dhanera,Gujarat,Others
10. Pintu Shah,Swetambar,Ahmedabad,Gujarat,Arts
11. Vikas Jain,Digambar,Bagidora,Rajasthan,Business
12. Vaibhav Jain,Digambar,Pune,Maharashtra,Arts
13. Sushil Kumar Jain,Swetambar,Jaipur,Rajasthan,Service
14. Ritu Jain,Swetambar,Aurangabad,Maharashtra,Business
15. Jayesh Kotecha,Digambar,Pune,Maharashtra,Engineer
16. Jayesh Khicha,Swetambar,Mumbai,Maharashtra,Industrialist
17. Somil Jain,Digambar,Kanpur,Uttar Pradesh,Arts
18. Dr. Sanjay Vora,Swetambar,Washim,Maharashtra,Medical
19. Viral Jain,Digambar,Ahmedabad,Guajrat,Arts
20. Abhishek Jain,Swetambar,Karol Bagh,Delhi,Service
21. Ashok Galada,Swetambar,Chennai,Tamilnadu,Finance
22. Gajendra Kumar Jain,Swetambar,Sojat City,Rajasthan,Consultancy
23. Vikas Kumar Jain,Digambar,Bhopal,Madhya Pradesh,Socialwork
24. Ajay Kumar Sipani,Swetambar,Bikaner,Rajasthan,Management
25. Siddharth Kothari,Swetambar,Pune,Maharashtra,Student
26. Suchitra Jain,Digambar,Alberta,Canada,Service
27. Vinod Kumar Jain,Digambar,Khargone,Madhya Pradesh,Business
28. Minal Jain,Swetambar,Bhopal,Madhya Pradesh,Consultancy
29. Sanjay Jain,Swetambar,Bhopal,Madhya Pradesh,Business

Place request to add your free listing in
World's largest Jain Directory on
www.jainsamaj.org
ENTRY FORM

Matrimonial Candidates

This Matrimonial Service is **free** for all Jain candidates

Click Online Individual Profile or Visit www.jainsamaj.org "Matrimonial Section" for details



BRIDES

1. Abhinay Kumar Jain,28,Digamber,Bhopal,Madhya Pradesh,Business
2. Niraj Sheth,39,Swetamber,Union,Nj,Service
3. Vatsal Jain,24,Swetamber,Ratlam,Madhya Pradesh,Service

4. Jayesh Kotecha,26,Swetamber,Pune,Maharashtra,Engineering
5. Dheeraj Maru,25,Swetamber,Kuwait,Computer
7. Harsh Jain,25,Digamber,Connaught Place,Delhi,Law
8. Deepak Kumar Agarwal,23,Digamber,Bhilwara,Rajasthan,Engineering
9. Rajiv Kumar Jain,30,Swetamber,Hyderabad,Andhra Pradesh,Computer
10. Chetan Limbikai,28,Digamber,Miraj,Maharashtra,Engineering
11. Vinay Kumar Kashappa,22,Digamber,Dharwad,Karnataka,Arts
12. Moon Jain,31,Digamber,Surat,Gujarat,Business
13. Manoj Kochar,29,Swetamber,Nagpur,Maharashtra,Business
14. Neeraj Kumar Jain,28,Digamber,Lalitpur,Uttar Pradesh,Computer
15. Vihans Dugar,28,Swetamber,Thane West,Maharashtra,Engineering
16. Vishal Jain,23,Swetamber,Bhayander,Maharashtra,Business
17. Nitin Jain,30,Digamber,Old Gupta Colony,Delhi,Service
18. Paras Sheth,26,Swetamber,Mumbai,Maharashtra,Business
19. Amit Jain,31,Digamber,Shahadra,Delhi,Engineering



GOOMS

1. Kirti Jain,23,Swetamber,Kalyan,Maharashtra,Service
2. Tanvi Jain,21,Digamber,Manendragarh,Chhattishgarh,Engineering
3. Manish Jain,23,Swetamber,Indore,Madhya Pradesh,Business
4. Preeti Jain,24,Digamber,Pratapgarh,Rajasthan,Computer
5. Deepika Jain,20,Swetamber,Ratlam,Madhya Pradesh,Others
6. Shruti Jain,25,Swetamber,Tri Nagar,Delhi,Business
7. Yuvika Jain,27,Swetamber,Raipur,Chhattisgarh,Engineering
8. Prerna Sancheti,24,Swetamber,Jabalpur,Madhya Pradesh,Computer
9. Namrata Gandhi,26,Swetamber,Nagpur,Maharashtra,Others
10. Mohita Rupani,25,Swetamber,Rajkot,Gujarat,Others
11. Darshna Jain,27,Swetamber,Kota,Rajasthan,Service

ENTRY FORM

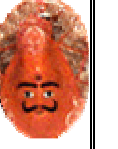
JAIN BUSINESS DIRECTORY -WELCOME TO NEW MEMBERS - JANUARY, 2013

1. Surya Padmavati,Bhavnagar,Gujarat,Food
2. Ajay R. Jain & Co.,Nawanshahr,Punjab,Chartered Accountants
3. Parmar Palace,Jaipur,Rajasthan,Household Items
4. General & Corporate,East Mumbai ,Maharashtra,Air Charters
5. Ess Pee Investment,Mumbai,Maharashtra,Finance
6. Puravi Industries,Gurgaon,Haryana,Industry
7. Naman Properties,Jaipur,Rajasthan,Real Estate
8. H Singhvi & Co.,Mumbai,Maharashtra,Chartered Accountants
9. .P.Enterprises,Kolkata, West Bangal,Medical
10. Sayli Offset Printer,Intur,Maharashtra,Medical



Advertisement Tariff - " AHIMSA TIMES"

**MAIL YOUR EMAIL ADDRESS FOR FREE COPY OF "AHIMSA TIMES" AND OTHER JAIN
CIRCULARS**



REQUEST TO READERS

If you find any inconsistencies or errors in Ahimsa Times, please do inform so that we can affect corrections.

Editor

- Ahimsa Foundation -

Delhi Office : 21, Skipper House , 9, Pusa Road , New Delhi - 5 , India

Phones : +91-11-2875-4012 & 13, 98-100-46108 , E-Mail ahimsa@jainsamaj.org

Jodhpur Office : 44, Sardar Club Scheme, Air Force Area, Jodhpur, Rajasthan, India

Phone : +91-291-267-0382, E-Mail : ahimsatimes@jainsamaj.org